Course code	Vaidik Sahitya Ka Vishisht Adhyayan Paper –VI	L	T	P	C
MSANL20Y201	वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- वैदिक व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में वैदिक संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना।
- वैदिक संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- वैदिक भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।
- वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन।

Course Outcome:

- वैदिक संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- वैदिक संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- वैदिक व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।
- वेदों में निहित नैतिक मूल्य सांस्कृतिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक तत्वों का प्रकाशन करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में वैदिक संस्कृत भाषा के कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- छात्रों में वैदिक संस्कृत भाषा के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- वेदों के उच्चारण विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- छात्रों को वैदिक संस्कृत भाषा के व्याकरण एवं भाषा विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ दक्ष बनाना।
- छात्रों को वेदों के विशिष्ट अध्ययन के लिए दक्ष बनाना।

Unit - 1 वैदिक साहित्य का विशिष्ट परिचय — 16

वैदिक साहित्य का विशिष्ट परिचय

- वैदिक भाष्य एवं भाष्यकारों के नाम।
- पाश्चात्य विद्वानों के नाम एवं रचनाएँ।
- अग्नि सूक्त।
- देवता सूक्त।
- इन्द्रसूक्त (2.12)।
- पुरुष सूक्त – (10.90)।

Unit – 2 प्रमुख सूक्त परिचय — 20

यजुर्वेदीय सूक्त–

- शिवसंकल्प सूक्त अध्याय –34।
- प्रजापति सूक्त अध्याय .23 (1.5)।

अथर्ववेदीय सूक्त –

- राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29)।,
- काल (10.53)।
- पृथ्वी सूक्त (12.1)।

Unit – 3 संवाद सूक्त	17
संवाद सूक्त – • पुरुरवा–उर्वशी। • यम–यमी। • सरमा –पणि • विश्वामित्र–नदी।	
Unit – 4 ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्	19
ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् – • ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं प्रकार। • अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास–यज्ञ परिचय। • पंच महायज्ञ–देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, ब्रह्मयज्ञ का परिचय। • शनुःशेष आख्यान।	
Unit - 5 वैदिक व्याकरण, निरुक्त का अध्ययन	18
वैदिक व्याकरण, निरुक्त का अध्ययन – • ऋक् प्रातिशाख्य : • परिभाषाएँ समानक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिक्ति (रेफिसंज्ञा) • निरुक्त (अध्याय–1 तथा 2) – नाम आख्यात् उपसर्ग। • निपात की कोटियॉं– निरुक्त अध्ययन प्रयोजन • निर्वचन के सिद्धान्त –वर्णागम ,वर्ण विपर्यय, वर्ण विकार, वर्ण लोप, धात्वार्थातिशय। • शब्दव्युत्पत्ति – आचार्य, वीरः, ह्रदः, समुद्रः, अग्निः, जातवेदस, वैश्वानर। • वैदिक स्वर – उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	1. वैदिक वाङ्मय का इतिहास – श्री रमाकान्त शास्त्री चौखम्बा, वाराणसी 2. वैदिक वाङ्मय एक परिशीलन – डॉ. ब्रजबिहारी चौबे। 3. वैदिक संग्रह एवं व्याख्या – डॉ. बलदेवसिंह मेहरा, शिवबुक्स इंटरनेशनल दिल्ली। 4. अभिनववेददीपिका (प्रथम सं.) डॉ. रमाकांत पाण्डेय जगदीश पुस्तकालय जयपुर। 5. निरुक्त (यास्ककृत) उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी। 6. वैदिक साहित्य – पं. बलदेव उपाध्याय। 7. पाणिनीय शिक्षा – पं. शिवराज आचार्य, चौखम्ब सुरभारती, वाराणसी।		

आनंद ... Ashish ...

Course code	Darshan Sahitya Vishisht Adhyayan Paper –VII	L	T	P	C
MSANL20Y202	दर्शन साहित्य विशिष्ट अध्ययन	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- भारतीय दर्शन के विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा में निहित दर्शन के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- दर्शन भाषा की कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- दर्शन के अध्ययन से आधुनिक एवं प्राचीन सामाजिक मूल्यों में समन्वय स्थापित करना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में दर्शन एवं भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- दर्शन के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियां एवं प्रयोगों का विकास होना।
- दर्शन विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- भारतीय दर्शन के विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना।

Unit - 1 सांख्यकारिका का प्रतिपाद्य एवं तत्त्व	18

सांख्यकारिका का प्रतिपाद्य एवं तत्त्व –

- सत्कार्यवाद
- पुरुष स्वरूप
- प्रकृति स्वरूप
- सृष्टिक्रम
- प्रत्ययसर्ग
- कैवल्य।

Unit – 2 वेदान्तसार का प्रतिपाद्य एवं तत्त्व	19

वेदान्तसार का प्रतिपाद्य एवं तत्त्व –

- अनुबंध चतुष्टय
- अज्ञान
- अध्यारोप
- अपवाद
- लिंगशरीरोत्पत्ति
- पंचीकरण

• विवर्त • महावाक्य • जीवनमुक्ति	
Unit – 3 तर्कभाषा एवं तर्कसंग्रह	17
तर्कभाषा एवं तर्कसंग्रह – • पदार्थ कारण। • प्रमाण। • प्रामाण्यवाद। • प्रमेय।	
Unit – 4 योगदर्शन	20
योगदर्शन – • पतंजलि योगसूत्र (व्यासभाष्य) • चित्तभूमि • चित्तवृत्तियाँ • ईश्वर का स्वरूप • योगांग • समाधि • कैवल्य	
Unit - 5 दार्शनिक ग्रन्थ एवं सिद्धान्त	16
सर्वदर्शन संग्रह का परिचय • जैनदर्शन : अनेकान्तवाद, स्याद्वाद। • बौद्धदर्शन के प्रमुख तत्त्व। • तत्वार्थसूत्र– (1 और 5 अध्यायों का परिचय एवं सूत्रों की व्याख्या)	

आनंद सिंह Ayan Ashishraj

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	1. सांख्यकारिका – उमाकान्त शुक्ल, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ, 2. भारतीय दर्शन – डॉ. उमेश मिश्र, हिन्दी समिति, उ.प्र. सरकार 3. भारतीय दर्शन – डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 4. सांख्य तत्व कौमुदी – रमाशंकर भट्टाचार्य मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 5. तर्क भाषा – केशव मिश्र, व्याख्याकार आचार्य विश्वेश्वर, 6. सर्वदर्शन संग्रह – डॉ. उमाशंकर शर्मा, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी 7. पातंजल योग दर्शनम् – डॉ. सुरेशचंद श्रीवास्तव चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 8. अर्थसंग्रह – लोगाक्षिभास्कर, चौखम्भा ओरियन्टलिया, दिल्ली 9. योगसूत्रंम् (व्यासभाष्य)– महर्षि पतंजलि, रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार 10. आप्तमीमांसा– आचार्य समन्तभद्र, वीरसेवा मंदिर, दिल्ली 11. तत्वार्थ सूत्र– आचार्य उमास्वामी, गणेश प्रसाद वर्णी शोधसंस्थान, वाराणसी 12. परीक्षा मुख– आचार्य माणिकनन्दि, अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना 13. प्रमेयरत्न माला– लघु अनन्तवीर्य, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 14. भारतीय दर्शन : जगदीशचन्द्र मिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 15. जैन न्याय, सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचंद शास्त्री, भारतीय ज्ञान पीठ, दिल्ली 16. जैन धर्म और दर्शन, मुनि प्रमाण सागर, श्री दि.साहित्य प्रमा. समिति बरेला, जबलपुर। 17. सत्यार्थ दर्शन (शब्दकोष) भाग 1–2–3, मुनि प्रबुद्धसागर,विद्याश्री ग्राफिक्स, जबलपुर 18. चैतन्य चन्द्रोदय (चंद्रिका टीका) मुनि प्रणम्यसागर,आर्हत विद्या प्रकाशन,गोटेगॉव नरसिंहपुर 19. जैनेन्द्रसिद्धान्त कोश,जिनेन्द्रवर्णी, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली 20. रत्नत्रय त्रिलोकरत्नाकर–गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली 21. रत्नत्रय पारिभाषिक शब्दकोष– गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली 22. षट्खण्डागम पारिभाषिक शब्दकोष– गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली 23. मूलाचार पारिभाषिक शब्दकोष– गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली		

Course code	Puradetihas, Dharamshastra Aur Abhilekh, Paper –VIII	L	T	P	C
MSANL20Y203	पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेखों के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख वाचन में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेख अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेखों में भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र और अभिलेखों के वाचन एवं लेखन संबंधि व्याकरण एवं भाषा विज्ञान में विशेषज्ञता के साथ छात्रों को दक्ष बनाना।

Unit - 1 रामायण एवं महाभारत	20

रामायण (बाल्मीकिकृत) एवं महाभारत (व्यासकृत) –

- विषयवस्तु
- समाज
- साहित्यिक महत्व
- आख्यान
- परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणा।

Unit – 2 पुराण –साहित्य	16

वैदिक पुराण परिचय –

- परिचय
- रचनाकाल
- प्रमुख पुराण
- लक्षण
- उपपुराण।

जैन पुराण परिचय। • पद्मपुराण – आचार्य.रविषेण कृत • आदिपुराण – आचार्य जिनसेन कृत • उत्तरपुराण – आचार्य गुणभद्र कृत • हरिवंशपुराण–आचार्य जिनसेन कृत	
Unit – 3 स्मृति एवं धर्मशास्त्र	**17**
स्मृति एवं धर्मशास्त्रों का सामान्य परिचय • (अ) मनुस्मृति • (ब) याज्ञवल्क्य स्मृति। **जैन धर्मशास्त्रों का सामान्य परिचय–** • (अ) रत्नकरण्डक श्रावकाचार – आ.समंदतभद्र कृत। • (ब) सुनीतिशतकम् – आ.विद्यासागर कृत। • (स) प्रश्नोत्तररत्नमाला –आ. अमोघवर्ष कृत।	
Unit – 4 लिपि परिचय	**19**
• **लिपि** – ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त, अभिलेखों का सामान्य परिचय।	
Unit - 5 अभिलेख वृत्त	18
अभिलेख – • अशोक और मौर्योत्तरकालीन अभिलेख • प्रमुख शिलालेख • प्रमुख स्तंभलेख • कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्धप्रतिमा लेख। • खारवेल का हाथी गुम्फा अभिलेख।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text Book(s) / Reference Books

1. अशोक के अभिलेख : डॉ. राजबली पाण्डेय, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
2. पाण्डुलिपि विज्ञान– डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
3. पाण्डुलिपि परिचय – अयोध्या चन्द्र दास. चन्द एण्ड कंपनी लि. रामनगर, नई दिल्ली।
4. पाण्डुलिपि विज्ञान – रामगोपाल शर्मा दिनेश।
5. शोधप्रविवि तथा पाण्डुलिपि विज्ञान– प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
6. पाण्डुलिपि : सूचीकरण एवं सम्पादन – डॉ. महेन्द्र जैन 'मनुज', प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, (विहार)।
7. पाठालोचन : सिद्धान्त और प्रकिया – मिथिलेश कत्रे
8. पाठानुसंधान – डॉ. सियाराम तिवारी
9. भारतीय पाठालोचन की भूमिका – डॉ. एस.एम. कत्रे
10. प्राचीन लिपिमाला – डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा
11. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
12. ब्राह्मी लिपि प्रवेशिका – रवीन्द्र कुमार वशिष्ठ, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली।
13. शारदा लिपि दीपिका – डॉ. श्रीनाथ तिक्कू, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
14. पुराण विमर्श – वलदेव उपाध्याय, चौखम्ब विद्या भवन, वाराणसी।
15. पुराण तत्त्वमीमांसा – श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
16. पद्मपुराण – (आ.रविषेण) डॉ.पं पन्नालाल साहित्याचार्य,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
17. आदिपुराण – आचार्य जिनसेन, डॉ.पं पन्नालाल साहित्याचार्य,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
18. उत्तरपुराण – आचार्य गुणभद्र, डॉ.पं पन्नालाल साहित्याचार्य,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
19. हरिवंशपुराण (आ.जिनसेन) डॉ.पं पन्नालाल साहित्याचार्य,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ,
20. हरिवंशपुराण परिशीलन, आचार्यज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र, व्यावर राजस्थान

Course code	Adhunik Jain Sanskrit Sahitya (Elective) Paper – IX –I	L	T	P	C
MSANL20Y204	आधुनिक जैन संस्कृत साहित्य	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- आधुनिक जैन संस्कृत साहित्य का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना।
- आधुनिक संस्कृत रचनाओं के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एव विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना।
- छात्रों में वर्तमान समस्याओं को संस्कृत भाषा की विविध विधाओं में सृजित करने का कौशल विकसित होना।

Unit - 1 आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज व्यक्तित्व– कृतित्व	16

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज एवं उनके द्वारा रचित महाकाव्यों एवं अन्य रचनाओं का परिचय–

- जयोदय
- दयोदय
- वीरोदय
- सुदर्शनोदय
- समुद्रदत्त चरित्र
- भद्रोदय (खण्डकाव्य)
- सम्यक्त्वसार शतक
- मुनि मनोरंजनाशीतिः
- भक्तिसंग्रह

आनंद जैन Ashishray

• हित संपादकम्	
Unit – 2 आचार्य विद्यासागर जी महाराज व्यक्तित्व– कृतित्व	20
आचार्य विद्यासागर जी महाराज एवं उनके द्वारा प्रणीत संस्कृत साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन । • श्रमणशतक • निरंजनशतक • भावनाशतक • परीषहजय शतक • सुनीतिशतक • संस्कृत हाइकू	
Unit – 3 आचार्य विरागसागर जी महाराज व्यक्तित्व– कृतित्व	17
आचार्य विरागसागर जी महाराज एवं उनके द्वारा प्रणीत संस्कृत टीकाएं एवं उनका विषय परिचयात्मक अध्ययन। • रत्नत्रयवर्धिनी टीका • सर्वोदया टीका • श्रमण संबोधिनी टीका • श्रमण प्रबोधिनी	
Unit – 4 मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज व्यक्तित्व– कृतित्व	19
मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज एवं उनके द्वारा प्रणीत संस्कृत कृतियॉ – • स्तुति–पथ – वीराष्टकम् और भरताष्टकम् सश्लोक । • नीति–पथ –प्रश्नोत्तर रत्नमालिका • कादम्बिनी टीका –बारसानुवेक्खा • आर्हत भाष्य– समाधि तंत्र	
Unit - 5 गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी व्यक्तित्व– कृतित्व	18
गणिनी प्रमुख ज्ञानमती माता जी एवं उनकी रचनाओं की विषय वस्तु एवं परिचय। • स्याद्वाद चिंतामणि– नियमसारप्राभृतम् • स्याद्वाद चंद्रिका –अष्टसहस्री • सिद्धांत चिन्तामणि –षट्खण्डागम	

	• वृषभदेव चरितम् • स्तोत्र साहित्य।		
# Mode: **Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures**			

Text Book(s) / Reference Books

1. स्याद्वाद चिंतामणि – आ. ग. ज्ञानमति माता जी, त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर।
2. स्याद्वाद चंद्रिका– आ. ग. ज्ञानमति माता जी, त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर।
3. सिद्धांत चिन्तामणि– आ. ग. ज्ञानमति माता जी, त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर।
4. वृषभदेव चरितं– आ. ग. ज्ञानमति माता जी, त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर।
5. रत्नत्रयवर्धिनी – आचार्य विरागसागर, ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
6. सर्वोदया – आचार्य विरागसागर, ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
7. पंच शतक– आचार्य विद्यासागर, धर्मोदय विद्यापीठ, सागर।
8. जयोदय महाकाव्य – आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज।
9. स्तुति पथ – मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज, आर्हत विद्याप्रकाशन गोटेगॉव नरसिंहपुर
10. नीति पथ – मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज,आर्हत विद्याप्रकाशन गोटेगॉव नरसिंहपुर ।
11. आर्हत भाष्य– मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज,आर्हत विद्याप्रकाशन गोटेगॉव नरसिंहपुर ।
12. कादम्बिनी टीका– मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज, आर्हत विद्याप्रकाशन गोटेगॉव नरसिंहपुर
13. बीसवीं शताब्दी के जैन मनीषियों का योगदान : नरेन्द्र सिंह राजपूत, सांगानेर जयपुर।
14. गणिनी प्रमुख – ज्ञानमती माता जी की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन (शोध प्रबंध) – डॉ. आशीष जैन शिक्षाचार्य,दमोह, डॉ. हरिसिंह गौर वि. वि. सागर।
15. .रत्नत्रय त्रिलोकरत्नाकर–गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली
16. .रत्नत्रय पारिभाषिक शब्दकोष– गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली
17. षट्खण्डागम पारिभाषिक शब्दकोष– गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली
18. मूलाचार पारिभाषिक शब्दकोष– गणिनी आर्यिका विशुद्धमति,रत्नत्रय प्रकाशन दिल्ली

Course code	Acharya Vidyasagar Avem Unka Sahitya (Elective) Paper – X- II	L	T	P	C
MSANL20Y205	आचार्य विद्यासागर एवं उनका साहित्य	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।
  काव्य शास्त्रीय विषय वस्तु एवं तत्वों का मूल्यांकन तथा परीक्षण करना।

Course Outcome:

- संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियां एवं प्रयोगों का विकास होना।
- संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्रीय समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- संस्कृत साहित्य एवं काव्य शास्त्र का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना।
- छात्रों को काव्य रचना एव काव्य प्रस्तुति की योग्यता में सम्पन्न बनाना।0
- छात्रों में संस्कृत के नूतन रचना कारों के प्रति सम्मान एवं ज्ञान की भावना जाग्रत करना।

Unit - 1 — 18

- जैन आचार्यों की परम्परा में आचार्य विद्यासागर जी महाराज का स्थान।

Unit – 2 — 19

- आचार्य विद्यासागर जी महाराज एवं उनकी रचनाओं का परिचय।

Unit – 3 — 17

आचार्य विद्यासागर जी महाराज की शिष्य परम्परा–

- मुनि समयसागर
- मुनि योगसागर
- मुनि नियमसागर
- मुनि क्षमासागर

• मुनि मादर्वसागर • मुनि सुधासागर • मुनि समतासागर • मुनि प्रमाणसागर • मुनि प्रबुद्धसागर • मुनि अजितसागर • मुनि अभयसागर • मुनि विमलसागर • मुनि प्रणम्यसागर • आचार्य श्री द्वारा दीक्षित मुनि एवं आर्यिकायें।	
Unit – 4	**20**
• चेतन चन्द्रोदय। • शारदा स्तुति।	
Unit - 5	**16**
• आचार्य विद्यासागर का शिक्षा दर्शन एवं सामाजिक अवदान।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	1. पंच शतक– आचार्य विद्यासागर, धर्मोदय विद्यापीठ, सागर। 2. चेतन चन्द्रोदय– आचार्य विद्यासागर, धर्मोदय विद्यापीठ, सागर। 3. शारदा स्तुति – आचार्य विद्यासागर, धर्मोदय विद्यापीठ, सागर। 4. महाकवि आचार्य विद्यासागर ग्रन्थावली (भाग –1 संस्कृत ग्रन्थ) : आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र, व्यावर, (राज.) 5. महाकवि आचार्य विद्यासागर ग्रन्थावली (भाग – 2,3,4) : आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र, व्यावर, (राज.) 6. जैन धर्म और दर्शन, मुनि प्रमाण सागर, श्री दि.साहित्य प्रमा. समिति बरेला, जबलपुर। 7. सत्यार्थ दर्शन (शब्दकोष) भाग 1–2–3, मुनि प्रबुद्धसागर,विद्याश्री ग्राफिक्स, जबलपुर 8. चैतन्य चन्द्रोदय (चंद्रिका टीका) मुनि प्रणम्यसागर,आर्हत विद्या प्रकाशन,गोटेगॉव नरसिंहपुर		

Course code	Sanskrit Ka Shikshan Shastra (Elective) Paper – X - III	L	T	P	C
MSANL20Y206	संस्कृत का शिक्षण शास्त्र	6	0	0	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एव विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना।

Unit - 1 **संस्कृत भाषा प्रकृति और महत्त्व**	16

संस्कृत भाषा प्रकृति और महत्त्व –

- संस्कृत भाषा का महत्त्व।
- अन्य भारतीय भाषाएँ।
- भारतीय संस्कृति और परम्परा।
- संवेगात्मक एकता के लिये संस्कृत का योगदान।

Unit – 2 **माध्यमिक स्कूल पाठ्यकम में संस्कृत का स्थान**	20

माध्यमिक स्कूल पाठ्यकम में संस्कृत का स्थान –

- त्रिभाषा सूत्र के सन्दर्भ में संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं प्राप्य उद्देश्य।
- निर्देशात्मक प्राप्य उद्देश्य।
- विशेष व्यावहारिक परिवर्तनों के स्वरूप में प्रत्येक प्राप्य उद्देश्य की विस्तृत जानकारी।

Unit – 3 **संस्कृत भाषा की पाठ योजना**	17

संस्कृत भाषा की पाठ योजना –

- गद्य, कविता, व्याकरण और लघु लेख में पाठ योजना।
- इकाई योजना – महत्त्व विशेषताएं।
- पाठ योजना – महत्त्व, प्रारूप, अभ्यास कार्य।

Unit – 4		19
भाषा कौशल पाठ्यक्रम रूपरेखा का विकास – • श्रवण का महत्त्व। • श्रवण के विकास के लिये गतिविधियाँ। • श्रवण का विशेषताएँ		

Unit - 5 वाचन लेखन पठन एवं पाठ्यक्रम	18
• **वाचन** – अच्छे वाचन की विशेषताएँ एवं इसके विकास की गतिविधियाँ। • **पठन** – पठन के विभिन्न प्रकार, प्राप्य उद्देश्य, पठन की यन्त्र विधा–मौन पठन। • **लेखन** – सुन्दर हस्तलेखन का महत्त्व, देवनागरी आलेख की विशेषताएँ, वर्तनी अशुद्धियों के कारण, उपचारात्मक उपाय। • संस्कृत में पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त। • संस्कृत में पाठ्यक्रम रूपरेखा – विषय केन्द्रित, अधिगमकर्त्ता केन्द्रित, समस्या केन्द्रित। • पाठ्यक्रम का कार्य। • पाठ्यक्रम विकास और मूल्यांकन।	

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			
Text Book(s) / Reference Books			
	1. संस्कृत का शिक्षण शास्त्र – डॉ. अमृतलाल दवे, राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. (लिमि.) आगरा। 2. संस्कृत शिक्षण शास्त्र– डॉ. रजनीश शर्मा, राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. (लिमि.) आगरा। 3. संस्कृत शिक्षण विधि– विजय नारायण चौबे, हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रभाग,उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।		

आनंद जैन Ashish

Course code	Dissertation/Project work , Paper – XI	L	T	P	C
MSANL20Y207	लघु शोध निबन्ध/परियोजना कार्य, प्रश्न पत्र –XI	4	0	6	10
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रूचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।
- शोध कार्य को बढ़ावा देना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।
- शोध कार्य एवं अनुसंधान का ज्ञान प्रदान करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में लेखन कौशल का विकास होना।
- छात्रों में लेखन के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना।
- शोध कार्य की समस्याओं का निदान होना।
- शोध कार्य को गति प्रदान करना।

प्रत्येक विद्यार्थी प्रश्नपत्र संख्या सप्तम से दशम प्रश्न पत्र तक पढ़े गये विषयों में से किसी एक विषय पर लघु शोध निबन्ध तैयार करना।

Course code	Subjective Presentation and Comprehensive viva -XII	L	T	P	C
MSANL20Y208	विषय प्रस्तुति एवं विस्तृत मौखिकी	0	0	6	6
Pre-requisite	Nil	Syllabus version			
		100 MARKS			

Course Objectives:

- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ ज्ञान प्रदान करना।
- विषय की समग्र और व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में संस्कृत साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- संस्कृत भाषा के अभ्यास की प्रवृत्ति को विकसित करना।
- भाषा में कुशलता एवं दक्षता को विकसित करना।
- भाषा से संबंधित भाषा दोषों को दूर करना।
- शोध कार्य को बढ़ावा देना।

Course Outcome:

- संस्कृत भाषा की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान करना।
- संस्कृत भाषा दक्षता और उसकी सूक्ष्मता का ज्ञान प्रदान करना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान के ज्ञान को विस्तारित एवं प्रसारित करना।
- शोध कार्य एवं अनुसंधान का ज्ञान प्रदान करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- छात्रों में अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियों एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एव विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।
- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान का विशेषज्ञता के साथ छात्र को दक्ष बनाना।
- शोध कार्य की समस्याओं का निदान होना।
- शोध कार्य को गति प्रदान करना।

प्रत्येक विद्यार्थी प्रश्नपत्र संख्या सप्तम से एकादश प्रश्न पत्र पढ़े गये विषयों में से किसी एक विषय पर प्रस्तुति और विस्तृत मौखिकी देना होगी।